देने वाला बड़ा है

जीवन की राहों में काँटे
मानव को भटकाते है
बच्चों की किलकारी सुन के
सन्नाटे दूर हो जाते है

जब बाग का माली शब्दों से
जुबान को दूषित रखता है,
इंसान तो क्या जानवर भी
शुकुन ढूंढता फिरता है,

अपशब्द से होने वाली चुभन
जीवन भर तड़फ़ाती है,
प्यार से रखने वालों के लिए
जीवन न्योछावर करती है

जो शक्ति है प्रेम व्यवहार में
सोना चांदी मोती में कहाँ,
जो अपनत्व है अपनेपने में
वो कुंठा से जीने में कहाँ,

सागर से मोती मिलने पर
जौहरी संभाल के रखता है,
ना समझ उस मोती को ही
पत्थर से तोड़ता फ़िरता हे,

जो देना जानता जीवन मे
काम प्रभु का करता है,
दुख जो समझे दीन दुखी का
वो मानव धर्म निभाता है,

जिस बाग में माली सुस्त हो
वो बाग सूखता जाता है,
आकाश में ड़र डर कर पंछी
घोंसला ढूंढ़ता फ़िरता है,

कोरोना काल के बुरे दौर में
सहयोग सभी का करना है,
मास्क लगाकर,हाथ धोकर
घर मे ही सबको रहना है,

✍ **गोपाल कृष्ण व्यास**